BHULEKH
Uttar Pradesh

निम्न खाते की प्रमाणित प्रति आनलाइन प्राप्त करने हेतु यहाँ क्लिक करें ।

खाता विवरण (अप्रमाणित प्रति)

ग्राम का नाम : राजापुर　परगना : (ग्वारिच)　तहसील : करनैलगंज　जनपद : गोंडा　फसली वर्ष : 1419-1424　भाग : 1　खाता संख्या : 00116

खातेदार का नाम / पिता पति संरक्षक का नाम / निवास स्थान	खसरा संख्या	क्षेत्रफल (हे.)	आदेश	टिप्पणी
श्रेणी : 1-क / भूमि जो संक्रमणीय भूमिधरों केअधिकार में हो।				
गोस्वामीतुलसीदासजन्मस्थलीहितुसुर / /	1267	0.0450		
	1276	0.1220		
	1279	0.0450		
	1280	0.0200		
	1286	0.0450		
	1272	0.0040		
	1286मि	0.0040		
	1309	0.5910		
	1268	0.1490		
	1270	0.0490		
	1271	0.0320		
	1274	0.1700		
	1278	0.0810		
	1283	0.0690		
	1284	0.0570		
	1285	0.0280		
	1287	0.0810		
	1288	0.0650		
योग	18	1.6570		

Disclaimer: उक्त आँकडे मात्र अवलोकनार्थ हैं, तहसील कम्प्यूटर केन्द्र एवम सी.एस.सी/लोकवाणी केन्द्र से उद्धरण की प्रमाणित प्रति प्राप्त की जा सकती है ।

Digital India　NIC NATIONAL INFORMATICS CENTRE

षटवार्षिक उद्धरण खतौनी

मिसल .... फसली से १४०६ फसली तक १४ [illegible]

इन्तखाब खतौनी ग्राम [illegible] परगना [illegible] तहसील [illegible] जिला [illegible] पर

खाता खतौनी क्रमांक संख्या	खातेदार का नाम पिता का नाम और निवास स्थान	मौलिक अधिकार प्राप्त होने का वर्ष	खेत के प्रत्येक खसरा संख्या	क्षेत्रफल	खातेदार द्वारा देय मालगुजारी का सालाना लगान (रु० पै०)	परिवर्तन सम्बन्धी आज्ञाओं का सारांश, उनकी संख्या तथा दिनांक, आज्ञा देने वाले अधिकारी का पद जो रजिस्ट्रार कानूनगो या निर्विवाद उत्तराधिकारी तथा भाग सम्बन्धी पट्टे के मामले में सुपरवाइजर कानूनगो द्वारा साक्षीकृत हुए। सन फसली	सन फसली	सन फसली	सन फसली	सन फसली	सन फसली	टिप्पणी
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
606	[illegible]	—	[illegible]	[illegible]								
608	[illegible]	—	[illegible]	[illegible]								
[illegible]	[illegible]	—	[illegible] [illegible] [illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]								
610	[illegible]	—	[illegible] [illegible]	[illegible] [illegible]								

महर्षि पतंजलि

● डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य

पुरातनकाल से भारत की पावन धरती पर समय-समय पर ऋषि, मुनि, महर्षि एवं महान विभूतियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः। स्वयं स्वयं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।। यहां के मनीषियों ने भारत के दिव्य अलौकिक ज्ञान से समस्त विश्व को उपकृत किया। उन्हीं श्रृंखला में महर्षि पतंजलि द्वापर एवं कलि के संध्याकाल में अवतरित हुए। पतंजलि शेष के अवतार थे। उन्होंने भगवान श्रीहरि से निवेदन किया कि मेरी विद्या का विकास नहीं हुआ। श्रीहरि ने आश्वास दिया कि आप पतंजलि के रूप में इस पावन धरती पर प्रादूर्भूत होकर गोनर्द देश में अवतार लेकर शास्त्रों का प्रचार करोगे। पतंजलि ध्यानमग्न होकर माता-पिता की तलाश में परिभ्रमण कर रहे थे। इसी बीच एक मुनि की गोणिका नाम की अविवाहित कन्या जो भगवान सूर्य को ध्यान मग्न होकर जल अर्घ्य दे रही थी। उसी समय पतंजलि उस कन्या की अंजलि से गिर गये। अंजलि से गिरने पर उनका नाम पतंजलि पड़ा। पतन्ति अंजलयोस्मिन् इति पतंजलिः अर्थात जिस महापुरूष के लिए प्राणिमात्र श्रद्धा से नतमस्तक हो सके, उसे पतंजलि कहते हैं। यह शेषावतार थे।

देवभाषा के इतिहास में महर्षि पाणिनि, कात्यान एवं पतंजलि का नाम मुनित्रय के रूप में विख्यात है। अमर ज्योति के तुल्य देदीप्यमान इनका कृतित्व लोकोपकारी एवं विद्वज्जनों द्वारा समादृत है। पाणिनि की अष्टाध्यायी पर महाभाष्य लिखने वाला तथा कात्यायन के वार्तिकों को परिष्कृत करने वलो महर्षि पतंजलि ने इन दोनों महर्षियों के कृतित्व को व्याकरण के मंदिर में प्रतिष्ठित किया है। इन्होंने व्याकरण जैसे शुष्क, नीरस और दूरूह विषय को सरल, सरस और मनोज्ञ बना दिया है।

पतंजलि के महाभाष्य में तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक, भौगोलिक, धार्मिक और सांस्कृतिक तथ्यों का विपुल भण्डार है। प्राचीन ग्रंथों में पतंजलि को गोणिका पुत्र, गोनर्दीय, अहिपति, फणिभृत तथा शषहि नामों से उल्लिखित किया गया है। विद्वानों का समुदाय गोनर्द को गोण्डा जनपद ही मानता है। जनश्रुति है कि महर्षि पतंजलि का जन्म स्थान अयोध्या के पास एवं तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत के पूर्वोत्तर गोण्डा जनपद का कोंडर नामक सीन है जो पतंजलिपुरी के नाम से पुकारा जाता है। इनकी रचनाओं में इनकी विद्वता, भाषा, ज्ञान, शब्द प्रयोग की शुद्धता एवं प्रौढ़ता, मानव स्वास्थ्य के संरक्षण का उत्कटाभिलाष, शक्तिमत्ता, महकवित्तव तथा योगशास्त्र के ज्ञान का वैभव प्रस्फुटित होता है।

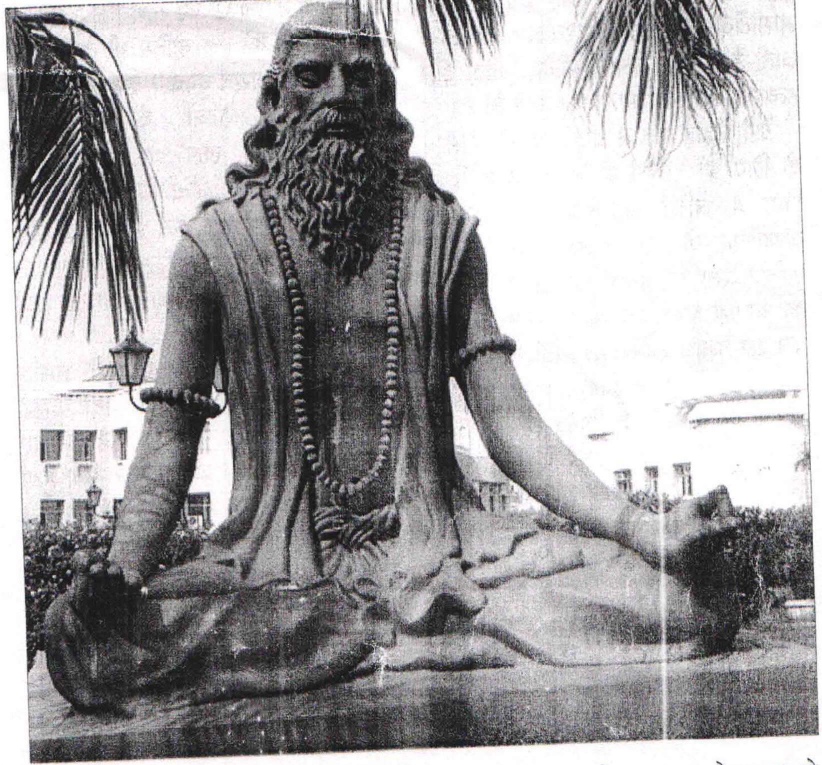

पतंजलि का जन्म-स्थान गोण्डा में होने के प्रमाण न्याय एवं युक्ति सिद्ध है। वहां स्थित कोंडर तालाब महर्षि के अगाध ज्ञान का प्रतीक है, क्योंकि ज्ञान एवं भक्ति की प्राप्ति प्रायः जीवात्मा एवं परमात्मा का मिलन प्रायः नदी और तालाब के किनारे ही होता रहा है।

पतंजलि योग सूत्र, सामवेदीय निदान सूत्र तथा चरक संहिता का परिष्कार लिखकर शरीर की शुद्धि का ग्रंथ मानवता को समर्पित किया है। महानन्द काव्य की रचना कर महाकवि के रूप में उन्होंने योगसूत्र की व्याख्या प्रस्तुत की है। महर्षि पतंजलि ने वाणी की शुद्धि, शरीर की शुद्धि तथा चित्त की शुद्धि के विषय पर अद्भुत ग्रंथों की रचना पर लोक को अत्याधिक उपकार किया है। शताब्दियों के व्यतीत हो जाने पर भी पतंजलि योगपीठ तथा पतंजलि आयुर्वेद को वैश्विक स्तर पर स्थापना करके करोड़ों लोगों को शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक शान्ति व चित्त शुद्धि का पावन कार्य जनहित को सिद्ध कर रहा है।

पातंजल योग दर्शन के द्वितीय सूत्र में योग की परिभाषा देते हुए महर्षि पतंजलि ने संकेत किया है कि 'योगश्वित्तनिरोधः' चित्त

प्रेषक,

भैरव नाथ
अनु सचिव
उत्तर प्रदेश शासन।

संख्या–88 /चार–2016

सेवा में,

जिलाधिकारी / पुलिस अधीक्षक,
गोण्डा।

संस्कृति अनुभाग

लखनऊः दिनांकः 25 जनवरी,2016

विषय– जन्मभूमि कोंडर (वजीरगंज), गोण्डा में महर्षि पंतजलि की आदमकद मूर्ति स्थापित किये जाने के सम्बन्ध में ।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक डा0 स्वामी भगवदाचार्य, अध्यक्ष,श्री पंतजलि जन्मभूमि न्याय, जन्मभूमि कोंडर (वजीरगंज), गोण्डा उ0प्र0 के पत्र दिनांक 29.06.2015 (छायाप्रति संलग्न) के कम में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि कृपया प्रश्नगत प्रकरण में निम्नलिखित बिन्दुओं पर अपनी स्पष्ट संस्तुति सहित संयुक्त हस्ताक्षरित स्पष्ट आख्या शासन को शीघ्र प्रेषित करने का कष्ट करे ताकि अग्रेतर कार्यताही की जा सके:–

1. जिस भूमि पर महापुरूष की प्रतिमा लगाई जानी प्रस्तावित है, वह भूमि सार्वजनिक भूमि है अथवा किसी की निजी भूमि।

2. यदि कोई सार्वजनिक भूमि है, तो संबंधित निकाय यथा–नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम, जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत, ग्राम सभा या जैसी भी स्थिति हो, की स्पष्ट संस्तुति / अनापत्ति से संबंधित निकाय के प्रस्ताव की प्रति भेजी जाय।

3. यदि किसी व्यक्ति की निजी भूमि पर किसी महापुरूष की प्रतिमा लगाई जानी प्रस्तावित है, तो संबंधित भूस्वामी का लिखित सहमति पत्र भेजा जाय।

4. जो संगठन / संस्था / निकाय उक्त महापुरूष की प्रतिमा लगाना चाहते है, इस बारे में संबंधित संगठन / संस्था / निकाय के लिखित प्रस्ताव की प्रति लगाई जाय।

5. उक्त महापुरूष की प्रतिमा लगाये जाने पर शांति व्यवस्था बनाये रखने के संबंध में जिलाधिकारी / वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा संयुक्त हस्ताक्षरित आख्या भेजी जाय।

6. कभी–कभी पुरानी प्रतिमा को हटाकर नई प्रतिमा लगाने का प्रस्ताव होता है। ऐसी दशा में पुरानी प्रतिमा को हटाये जाने के बारे में संबंधित उस संगठन / संस्था / निकाय का प्रस्ताव / सहमति, जिसने पुरानी प्रतिमा स्थापित कराई थी।

7. यदि वह भूमि, जिस पर प्रतिमा की स्थापना प्रस्तावित है, विवाद ग्रस्त हो या उसके बारे में कोई मुकदमा आदि चल रहा है, तो उस मुकदमें के तथ्यों तथा उसकी अद्यतन स्थिति के बारे में आख्या भेजी जाय। यदि कोई स्थगनादेश हो तो उसकी प्रति भी भेजी जाय।

8. प्रस्तावित मूर्ति के निर्माण पर आने वाले व्यय भार हेतु नियमानुसार 25 प्रतिशत धनराशि को स्वयं वहन किये जाने के संबंध में प्रस्तावक द्वारा सहमति / अनुमति प्रदान किया जाना।

9. प्रश्नगत मूर्ति स्थापित करने पर यातायात में बाधा पहुँचने की सम्भावना है अथवा नही।

10. विशेष अनुज्ञा याचिका (सिविल) सं0–(एस)8519 / 2006 यूनियन आफ इण्डिया बनाम गुजरात राज्य एवं अन्य में मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा पारित आदेश दिनांक 18.01.2013 एवं 05.07.2013 से आच्छादित तो नही है।

संलग्नक–यथोक्त

भवदीय,

(भैरव नाथ शुक्ल)
अनु सचिव।

–2

Draft>2014

आयकर विभाग

INCOME TAX DEPARTMENT

भारत सरकार

GOVT. OF INDIA

SWAMI BHAGAVADACHARYA

SWAMI NRITYA GOPALDAS

09/10/1952

Permanent Account Number

BSMPB4306D

07062013

Signature

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0) भारत
तुलसीधाम, श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर (सूकरखेत) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) भारत

दिनांक– 09.07.2016

सेवा में,

माननीय श्री महेश शर्मा जी,
पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री,
भारत सरकार नई दिल्ली

<u>विषय– अयोध्या की 84 कोसी परिक्रमा को पिच रोड कराने के सम्बन्ध में।</u>

महोदय,

मानवता की उद्गम स्थली अयोध्या भगवान श्रीराम एवं श्रीमानस की अवतार भूमि रही है। अयोध्या की महिमा पुरातन काल से सुविख्यात है। चैत कृष्ण प्रतिपदा से 84 कासी परिक्रमा प्रतिवर्ष विशाल जनसमूह में संत–महात्मा, श्रद्धालुगण एवं भक्तगणों द्वारा परम्परागत आयोजित होती है। इस परिक्रमा में तीन प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थल सम्मिलित हैं। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की जन्मस्थली अयोध्या के पास गोण्डा जनपद में सूकरखेत राजापुर, द्वितीय मखौड़ा जनपद बस्ती जहाँ चक्रवर्ती दशरथ जी ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था और तृतीय भरत की तपस्थली भरतकुण्ड (नन्दिग्राम) जनपद फैजाबाद में स्थित है। 84 कोसी परिक्रमा सुव्यवस्थित न होने से भक्त जनों को यात्रा में महान कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि इस परिक्रमा को पिच रोड (पक्की सड़क) के रूप में निर्मित करा दिया जाय तो भक्त जनों को यात्रा में सुख सुविधा अनायास प्राप्त हो जायेगी।

अतएव आपसे सादर अनुरोध है कि अयोध्या की गरिमा एवं महिमा को देखते हुए 84 कोसी परिक्रमा को पिच रोड कराने का अवश्यमेव कष्ट करें।

महती कृपा होगी।

भवदीय

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0–09452270370

श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0)

दिनांक–21.12.2015

सेवा में,

श्रीमान् सहायक निदेशक (योग)

आयुष मंत्रालय भारत सरकार,

नई दिल्ली।

विषय–श्री पतंजलि जन्मभूमि में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान विषयक विकास के सन्दर्भ में।

महोदय,

निवेदन है कि आपके मंत्रालय द्वारा प्रेषित पत्र प्राप्त कर यह जानकारी मिली कि केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद मुख्यतः योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संबन्धित कार्यों का ही प्रचार एवं प्रसार करती है। महर्षि पतंजलि अन्तर्राष्ट्रीय योग विश्वविद्यालय की स्थापना करना परिषद के कार्य क्षेत्र के बाहर है।

अतएव आपसे अनुरोध है कि आप अपने मंत्रालय से योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी जो भी कार्य कर सकते हैं, उसे पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा, उ0प्र0 में मूर्तरूप प्रदान करने का कष्ट करें। इसके साथ ही पत्रोत्तर द्वारा कृपया यह भी अवगत करायें कि किस कार्य के लिए कितने एकड़ जमीन की आवश्यकता पड़ेगी। इस पुनीत कार्य में रूचि लेते हुए ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटक स्थली को विकसित करने का कष्ट करें।

महती कृपा होगी।

भवदीय

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य,
अध्यक्ष
मो0–0945227037

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ
तुलसीधाम, श्री तुलसी जन्मभूमि, राजापुर (सूकरखेत) गोण्डा, उ0प्र0

सेवा में,

श्रीमान् जिलाधिकारी महोदय,
जनपद–गोंडा

विषय :– गोंडा जिलान्तर्गत करनैलगंज का नाम बदलकर गोस्वामी तुलसीदास नगर कराने के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास के द्वारा तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोंडा का समूचित विकास किया जा रहा है परन्तु देश को आजाद हुए 67 वर्ष गुजर रहे हैं अभी तक पराधीनता इस क्षेत्र में विद्यमान है। कर्नल व्यालू एक अंग्रेज अधिकारी था, जिसके नाम पर करनैलगंज नाम अभी तक चला आ रहा है। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोंडा का परगना व तहसील करनैलगंज पराधीनता के रूप में अभी तक एक कलंक के रूप में विद्यमान है। आज सारे देश में पराधीनता सूचक कलंक को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। कलकत्ता को कोलकाता, मद्रास को चेन्नई, त्रिवेन्द्रम् को तिरूवनंतपुरम्, बम्बई को मुम्बई, बीटी को छत्रपति शिवाजी टर्मिनल के रूप में किया जा चुका है।

अतएव आपसे सादर अनुरोध है कि तुलसी के सम्मान में गोंडा जिले के करनैलगंज का नाम बदलकर गोस्वामी तुलसीदास नगर कराने का कष्ट करें। महती कृपा होगी।

सादर

भवदीय,

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0–9452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर(कमता) चिनहट, लखनऊ
तुलसीधाम, तुलसी जन्मभूमि राजापुर(सूकरखेत) गोण्डा, उ0प्र0

सेवा में,

श्रीमान् सचिव महोदय,
मुख्यमंत्री, उ0प्र0।
लखनऊ

महोदय,

आपको स्मरण होगा जब आप गोण्डा में जिलाधिकारी थे तो आपने श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के जन्म स्थान अयोध्या के पास गोण्डा जनपद में सूकरखेत स्थित सरयू तट राजापुर के विकास के लिये अपने कार्यकाल में कई योजनाऐं बनवायी थीं हम उसके लिये कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

यूनेस्को के तत्वावधान में इन्टैक के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण स्थलों का चयन किया जा रहा है। जो ऐतिहासिक महत्व के हैं। भारत में ताजमहल, गंगा नदी और जिमकार्बेट पार्क, हिमालय आदि स्थानों के संरक्षण एवं संवर्धन का दायित्व इन्टैक ने लिया है। हमारे उत्तर प्रदेश में गोस्वामी तुलसीदास के जन्म स्थान का वही महत्व है। जो इग्लैण्ड में शैक्सपियर के जन्म स्थान और रूस में टाल्सटाय के जन्म स्थान का है। इसके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुये मेरा आपसे निवेदन है कि उत्तर प्रदेश से भेजे जाने वाले ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की सूची में इसे प्रथम स्थान दिया जाय।

सादर

भवदीय,
स्वामी भगवदाचार्य
डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0-9452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ

धर्मपरायण शर्मा जी,

पर्यटन और संस्कृति मंत्री का पदभार ग्रहण करने के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। आपके आने से पर्यटन एवं संस्कृति के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात होगा। ऐसी मेरी अभिलाषा है।

मैं विशेष रूप से आपका ध्यान तुलसी जन्मभूमि की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ जो आज भी उपेक्षित और अविकसित है। सारे ऐतिहासिक और पौराणिक प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि अयोध्या के पास गोण्डा जनपद में सूकरखेत स्थित सरयू तट, राजापुर ही उनकी जन्मस्थली है। विश्व पर्यटन स्थल पर इसे गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये निम्नलिखित कार्य आवश्यक होंगे -

1. अयोध्या और लखनऊ से पहुँच मार्ग को डबल लेन बनाने का आदेश करें ताकि यात्री लखनऊ और अयोध्या से वहां पहुँच सकें।
2. सड़क मार्ग पर आवश्यक सुविधाऐं जैसे प्रसाधन और पेयजल सुलभ कराया जाय।
3. तुलसी जन्मभूमि राजापुर गोण्डा में एक तुलसी सभागार का निर्माण कराया जाय। जहां रामायण मेले और तुलसी मेले का आयोजन किया जा सके।
4. वहाँ तुलसी संग्रहालय का निर्माण किया जाय जहाँ सभी भाषाओं में लिखी गई रामायणों का पठन-पाठन और उन पर शोध सम्भव हो सके।
5. तुलसी शोध संस्थान का निर्माण कराया जाय।
6. अयोध्या और लखनऊ से संचालित भ्रमणों का आयोजन कराया जाय।
7. यात्रियों के ठहरने के लिये आवासीय व्यवस्था तथा जलपान गृह का निर्माण कराया जाय।
8. यात्रियों के लिये सरयू नदी के तुलसी घाट को उसी तरह विकसित किया जाय जैसे काशी में पंच गंगा या दशाश्वमेध घाट को विकसित किया गया है।
9. यात्रियों के मनोरंजन के लिये ध्वनि एवं प्रकाश के द्वारा रामकथा के प्रदर्शन का आयोजन किया जाय।

आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप एक बार तुलसी जन्मभूमि अवलोकन करने का कष्ट करें और हमारा आतिथ्य स्वीकार करें।

भवदीय

सेवा में,
श्री महेश शर्मा जी,
पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0- 09452270370

संख्या 9741
31/10/13

सोसाइटी के नवीनीकरण का प्रमाण – पत्र

नवीकरण संख्या 3971-2013-2014

फाइल संख्या 1-95495

एतद्द्वारा प्रमाणित किया जाता है कि सनातन धर्म परिषद भुइयाँ देवी मन्दिर

श्री तुलसी पीठ, सनातन धर्म आश्रम निकट फैजाबाद रोड, लखनऊ।

को दिये गये रजिस्ट्रीकरण प्रमाण – पत्र संख्या 3395/1988-1989

दिनांक 07/09/1988 को दिनांक 07/09/2013 से पांच वर्ष की अवधि के लिए नवीकृत किया गया है ।

1150 रूपये की नवीकरण फीस सम्यक् रूप से प्राप्त हो गयी है ।

दिनांक 31/10/2013

सोसाइटी के रजिस्ट्रार,
उत्तर प्रदेश ।

अमर उजाला MyCity फैजाबाद

गोंडा के राजापुर में हुआ था तुलसीदास का जन्म

संतों ने किया तुलसी पर केंद्रित शोधपरक कृति का लोकार्पण

अमर उजाला ब्यूरो

अयोध्या। गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बांदा के राजापुर में न होकर गोंडा में सरयू और घाघरा के संगम स्थल पर स्थित सूकरखेत के करीब राजापुर गांव में हुआ था।

इस तथ्य की तस्दीक डॉ. स्वामी राघवचार्य के संपादन में लोकार्पित कृति तुलसीदासः एक प्रामाणिक सर्वेक्षण से होती है। इस कृति का लोकार्पण रामनगरी की प्रतिष्ठित पीठ राजगोपाल मंदिर में समारोह पूर्वक किया गया। इस मौके पर महंत मैथिलीरमणशरण, महंत कमलनयनदास, महंत अवधकिशोर शरण, महंत वृजमोहनदास, रामानंदाचार्य स्वामी रामदिनेशाचार्य, महंत गिरीशपति त्रिपाठी, महंत पवनदास, डॉ. ब्रह्मानंद पाठक, डॉ. कृपाशंकर तिवारी, शिक्षक ओमप्रकाश ब्रह्मचारी, आचार्य रघुनाथ शास्त्री, डॉ. रामतेज पांडेय लोग शामिल हुए।

मौके पर हुई विद्वत गोष्ठी का संचालन आचार्य कृष्णकुमार मिश्र ने किया व अध्यक्षता ब्रह्मानंद पाठक ने की, जबकि मुख्य वक्ता महंत कौशलकिशोरशरण फलाहारी रहे। कार्यक्रम का संयोजन राजगोपाल के अधिकारी सर्वेश्वरदास ने किया।

लंबे समय से बुलंद हो रहा गोंडा के राजापुर का दावा

अयोध्या। तुलसीदास का जन्म गोंडा जिले के सूकरखेत के करीब स्थित राजापुर में होने का दावा लंबे समय से बुलंद हो रहा है। 27-28 दिसंबर सन 1995 को काशी विद्यापीठ, वाराणसी में आयोजित चतुर्थ विश्व तुलसी सम्मेलन के मौके पर सभी प्रतिनिधियों ने तुलसी की जन्म स्थली के रूप में गोंडा के राजापुर को स्वीकार किया था। इससे पूर्व ही से संचालित डॉ. भगवदाचार्य की भी मुहिम अपना असर डालती रही। इस मान्यता को स्वीकृति देने वाले विद्वानों में युग तुलसी पं. रामकिंकर, पूर्व मुख्यमंत्री श्रीपति मिश्र, पूर्व उपराज्यपाल त्रिभुवनप्रसाद तिवारी, दिग्गज साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र, मशहूर फिल्मकार रामानंद सागर, गायक अनूप जलोटा सहित विशिष्ट जनों व विद्वानों की बड़ी जमात है।

श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास

कार्यालयः सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0)
पतंजलिपुरी, श्रीपतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज), जनपद– गोण्डा (उ0प्र0)

दिनांक– /10/2016

सेवा में,

श्रीमान् प्रमुख सचिव महोदय,
पर्यटन विभाग, उ0प्र0 शासन,
लखनऊ

विषयः श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद गोण्डा में ''पतंजलि महोत्सव'' का आयोजन।

महोदय,

सनातन धर्म परिषद् एवं श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास के तत्वावधान में विगत 12 वर्षों से पतंजलि महोत्सव प्रतिवर्ष श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) गोण्डा में आयोजित किया जाता है। गोण्डा जनपद के कोंड़र में योग के प्रणेता महर्षि पतंजलि जन्म लेकर इस स्थान को विश्वपटल पर पर्यटन के नक्शे पर महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है, परन्तु खेद का विषय है कि हम इस स्थान की सत्ता और महत्ता को जन–जन तक नहीं पहुँचा पाये हैं। अतः हमारा प्रस्ताव है कि इस स्थान पर प्रतिवर्ष पतंजलि के गरिमानुरूप पतंजलि महोत्सव का आयोजन किया जाय। यह आयोजन अयोध्या और चित्रकूट के रामायण मेले तथा मगहर महोत्सव की तरह किया जाना चाहिए और शासन जैसे उन आयोजनों के लिये धन आवंटित करती है वैसे इस पतंजलि महोत्सव के लिये भी धन आवंटित किया जाय। आशा है कि आप हमारे इस प्रस्ताव से सहमत होंगे।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि पतंजलि महोत्सव आयोजन के लिये शासकीय अनुदान पर्यटन विभाग के माध्यम से उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

महती कृपा होगी।

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

(डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य)
अध्यक्ष
मो0 9452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर, चिनहट लखनऊ
श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद–गोण्डा (उ0प्र0)

दिनांक– 5/10/2016

सेवा में,

माननीय श्री महेश शर्मा जी,
पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री
भारत सरकार,
नई दिल्ली

विषय–श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद–गोण्डा उ0प्र0 का पर्यटन विकास एवं सौन्दर्यीकरण हेतु।

मान्यवर,

निवेदन है कि श्री रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी श्री तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद--गोण्डा उ0प्र0 एक ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक तथा पर्यटक स्थली हैं। इस पावन जन्मभूमि के दर्शनार्थ देश–विदेश के लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष पधारते है परन्तु तुलसी के गरिमानुरूप यहाँ पर दर्शकों के लिए कोई भी आकर्षण का केन्द्र नहीं हैं। सम्पूर्ण दुनिया में महान साहित्यकारों की जन्मभूमि को ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की सूची में इसे प्रथम स्थान दिया जाता है तथा उस स्थल को पर्यटक स्थली के रूप में विकसित कर दर्शकों के लिए सौन्दर्यीकरण किया जाता है। इंग्लैण्ड में शेक्सपीयर के जन्म स्थान, रूस में टाल्सटाय के जन्म स्थान तथा जर्मनी में गेटे के जन्मस्थान को विकसित कर सौन्दर्यीकरण किया गया है।

अतएव आपसे सादर अनुरोध है कि विश्ववंद्य गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोण्डा उ0प्र0 इसके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए तुलसी जन्मभूमि को पर्यटक स्थली के रूप में विकसित कर सौन्दर्यीकरण किया जाय तथा विश्व के पर्यटन सूची में इसे सन्दर्भित कराया जाय जिससे यह पावन ऐतिहासिक स्थल भक्त जनों तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन सकें। महती कृपा होगी।

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

(डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य)
अध्यक्ष
मो0–09452270370

Dr. Vatsala J. Pande

अतिरिक्त निजी सचिव
सड़क परिवहन,
राजमार्ग एवं पोत परिवहन मंत्री
भारत सरकार
Additional Private Secretary
to the Minister of Road Transport,
Highways & Shipping
Government of India

सत्यमेव जयते

DO/850/MIN/RT&H/VIP/2015

27 फरवरी, 2015

प्रिय डॉ. स्वामी भगवदाचार्य जी

माननीय मंत्री जी को संबोधित आपका दिनांक 28 जनवरी, 2015 का पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें आपने अयोध्या से प्रयाग, चित्रकूट, नासिक, किष्किंधा और रामेश्वरम तक के श्रीराम वन गमन मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित करने के संबंध में लिखा है।

शुभकामनाओं सहित।

(वत्सला जे. पाण्डे)

डॉ. स्वामी भगवदाचार्य
संस्थापक अध्यक्ष,
सनातन धर्म परिषद्
सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर
चिनहट, लखनउ
उत्तर प्रदेश

Transport Bhawan, New Delhi-110 001 Tel. : 23710356, 23356710, Fax : 23356709
Email : vatsala_joshi@yahoo.co.in, vatsala.pande@nic.in

विधान सभा के द्वितीय सत्र, 2012 के प्रथम बुद्धवार के लिए निर्धारित श्री मुकेश श्रीवास्तव उर्फ ज्ञानेन्द्र प्रताप, मा0 सदस्य,विधान सभा द्वारा पूँछे गये तारांकित प्रश्न संख्या–6 का उत्तर।

प्रश्न		उत्तर
6. क्या मुख्यमंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जनपद गोण्डा में गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली सूकरखेत को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने की सरकार की कोई योजना है ?		जी हाँ।
यदि हां, तो उसका विवरण क्या है ?		इस योजना के अन्तर्गत गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली सूकरखेत का पर्यटन विकास कराये जाने हेतु वित्तीय वर्ष 2012–13 में जिला योजना समिति के द्वारा रू0 20.00 लाख का प्रस्ताव अनुमोदित है।
यदि नही, तो क्यों ?		प्रश्न नही उठता।

अखिलेश यादव
मुख्यमंत्री

विश्व साधु परिषद

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर(कमता), चिनहट, लखनऊ(उ०प्र०)

सेवा में,

मानननीय मुख्यमंत्री महोदय,
उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ ।

महोदय,

सादर अवगत कराना है कि उ०प्र० में कई लाख साधु-सन्त समुदाय जो विभिन्न आश्रमों में रह कर साधनारत हैं, तथा मानव समाज को कर्तव्य परायण तथा समाज में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन सभी साधु सन्तों जिसमें भारी संख्या में महिलाएं भी शामिल हैं शासकीय योजनाओं से वंचित हैं, जबकि उन लोगों की आय नगण्य है। उन साधु सन्तों के नाम कोई सम्पत्ति नहीं है। ये साधु सन्त भी समाज के अंग हैं तथा नागरिक होने के नाते संविधान के अन्तर्गत जो प्रदत्त सुविधाएँ हैं, उनको पाने के लिये हकदार हैं। अधिकतर साधु-सन्त झुग्गी, झोपड़ी में ही प्रवास करते हैं। सरकार द्वारा ऐसी तमाम कल्याणकारी योजनाएं चलाई जाती हैं, जिससे यह वर्ग अछूता है। इस वर्ग में हर जति एवं सम्प्रदाय के लोग हैं। आजादी के बाद से अब तक इस वर्ग के कल्याणार्थ कोई योजना संचालित नहीं की गयी है।

अतः हम सभी उपरोक्त विषय पर ध्यान आकर्षित करते हुए निवेदन करते हैं कि साधु-सन्तों के हिताय पेन्शन, आवास सुविधा, चिकित्सा सुविधा, परिवहन सुविधा निशुल्क दिया जाय, जिससे कि यह वर्ग राष्ट्रीय धारा की योजनाओं से जुड़ सके। इस विषय वांछित कार्यवाही हेतु हम सभी आभारी रहेंगे।

दिनांकः

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

डॉ० स्वामी भगवदाचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
विश्व साधु परिषद
सनातन धर्म परिषद
मो०न०-०६४५२२७०३७०

विश्व साधु परिषद

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ उ0प्र0

दिनांक–

सेवा में,

माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी,
प्रधानमंत्री, भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय– विश्व साधु परिषद् के हितार्थ हेतु आवेदन पत्र।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि तृतीय विश्व साधु सम्मेलन का आयोजन 10 एवं 11 सितम्बर 2016 को विश्व साधु परिषद के तत्वावधान में नयी दिल्ली में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम विश्वगिरि मंदिर (मेहता चौक) राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

सादर अवगत कराना है कि समस्त भारत में करोड़ों की संख्या में साधु–संत समुदाय जो विभिन्न आश्रमों में रह कर साधनारत हैं, तथा मानव समाज को कर्तव्य परायण तथा समाज में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन सभी साधु–संतों जिसमें भारी संख्या में साध्वी महिलाएँ भी शामिल हैं, शासकीय योजनाओं से वंचित हैं, जबकि उन लोगों की आय नगण्य है। उन साधु–संतो के नाम कोई सम्पत्ति नहीं है। ये साधु–संत भी समाज के अंग हैं तथा नागरिक होने के नाते संविधान के अन्तर्गत जो प्रदत्त सुविधाएँ हैं, उनको पाने के लिये हकदार हैं। अधिकतर साधु–संत झुग्गी, झोपड़ी में ही प्रवास करते हैं। सरकार द्वारा ऐसी तमाम कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जाती हैं, जिससे यह वर्ग अछूता है। इस वर्ग में हर जाति एवं सम्प्रदाय के लोग हैं। आजादी के बाद से अब तक इस वर्ग के कल्याणार्थ कोई योजना संचालित नहीं की गयी है।

अतः हम सभी उपरोक्त विषय पर सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए साधु–संतों ने यह प्रस्ताव पारित किया कि साधु–संतो के हिताय पेन्शन, आवास सुविधा, चिकित्सा सुविधा, परिवहन सुविधा एवं रेल सुविधा निःशुल्क दिया जाए, जिससे कि यह वर्ग राष्ट्रीय धारा की योजनाओं से जुड़ सके। इस हेतु दिल्ली में तृतीय विश्व साधु सम्मेलन के आयोजन में साधु–संतों द्वारा पारित प्रस्ताव सरकार को वांछित कार्यवाही को साकार रूप देने की कृपा करें।

सधन्यवाद!

भवदीय

(डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य)
अध्यक्ष
मो0–9452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ, उ0प्र0
तुलसीधाम, श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर, सूकरखेत, जनपद–गोण्डा, उ0 प्र0

सेवा में,

माननीय श्री प्रकाश जावड़ेकर,
मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

विषय : श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत, जनपद–गोण्डा, उ0 प्र0 का उल्लेख एन0सी0आर0टी0 की प्रकाशनार्थ पुस्तकों में प्रकाशित कराने विषयक।

महोदय,

निवेदन है कि श्रीतुलसी जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद के प्रयासों से 'श्रीरामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी श्री तुलसीदास की जन्मभूमि अयोध्या के समीप गोण्डा जनपद में सूकरखेत स्थित सरयू तट, राजापुर में स्थित है। उनकी जन्मभूमि पर पिछले कई वर्षों से भ्रमात्मक तथ्य जनमानस में व्याप्त थे। इधर 15 नवम्बर 1992 से श्री तुलसी की जन्मभूमि के सम्बन्ध में कई आन्दोलन किये गये। स्थानों के सर्वेक्षण विद्वानों की संगोष्ठियों, लोकोक्तियों तथा जनश्रुतियों के माध्यम से इस भ्रमात्मक तथ्य का निवारण हो चुका है। इतना ही नहीं राजस्व रिकार्डों में भी गोस्वामी जी के पिता आत्माराम दुबे के नाम 45 बीघा जमीन भी प्राप्त हुई है। सरकार द्वारा उ0 प्र0 में माध्यमिक शिक्षा परिषद की पुस्तक 'काव्यांजलि' एवं 'काव्य संकलन' में भी तुलसी जन्मभूमि सूकरखेत गोण्डा का उल्लेख है। माननीय मुख्यमंत्री द्वारा भी तुलसी जन्मभूमि को सूकरखेत गोण्डा स्वीकारते हुए 20 लाख रूपये की धनराशि पर्यटन विकास के लिए घोषणा भी की है। पं0 रामकिंकर उपाध्याय, श्री मोरारी बापू, श्री अनूप जलोटा तथा विश्वविद्यालयों के प्रतिष्ठित विद्वानों ने भी इस बात को भलीभाँति स्वीकार कर लिया है कि अयोध्या के समीप गोण्डा जनपद के सूकरखेत स्थित सरयूतट राजापुर में श्री तुलसी ने जन्म लेकर अपनी रचनाधर्मिता से समूचे विश्व को उपकृत किया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई जी भी बलरामपु, जिला प्रचारक के समय सूकरखेत का भ्रमण किये थे।

अतः आपसे सादर विनम्र अनुरोध है कि श्रीरामचरितमानस के अमर प्रणेता गोस्वामी श्री तुलसीदास की जन्मभूमि अयोध्या के समीप गोण्डा जनपद में सूकरखेत स्थित सरयूतट राजापुर उ0 प्र0 का उल्लेख एन0सी0आर0टी0 की प्रकाशनार्थ पुस्तकों में संदर्भित कराने का कष्ट करें, ताकि भावी पीढ़ियाँ श्री तुलसी जन्मभूमि के सम्बन्ध में दिग्भ्रमित न हों।

महती कृपा होगी।

संलग्नकः उपरोक्तानुसार

दिनांक :

भवदीय

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0 नं0 09452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर, चिनहट लखनऊ
श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद–गोण्डा (उ0प्र0)

दिनांक– 6/10/2016

सेवा में,

माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी,
प्रधानमंत्री
भारत सरकार,
नई दिल्ली

विषय–श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद–गोण्डा उ0प्र0 का पर्यटन विकास एवं सौन्दर्यीकरण हेतु।

मान्यवर,

निवेदन है कि श्री रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी श्री तुलसीदास जी की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद--गोण्डा उ0प्र0 एक ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक तथा पर्यटक स्थली हैं। इस पावन जन्मभूमि के दर्शनार्थ देश–विदेश के लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष पधारते है परन्तु तुलसी के गरिमानुरूप यहाँ पर दर्शकों के लिए कोई भी आकर्षण का केन्द्र नहीं हैं। सम्पूर्ण दुनिया में महान साहित्यकारों की जन्मभूमि को ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की सूची में इसे प्रथम स्थान दिया जाता है तथा उस स्थल को पर्यटक स्थली के रूप में विकसित कर दर्शको के लिए सौन्दर्यीकरण किया जाता है। इंग्लैण्ड में शेक्सपीयर के जन्म स्थान, रूस में टाल्सटाय के जन्म स्थान तथा जर्मनी में गेटे के जन्मस्थान को विकसित कर सौन्दर्यीकरण किया गया है।

अतएव आपसे सादर अनुरोध है कि विश्ववंद्य गोस्वामी तुलसीदास की जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोण्डा उ0प्र0 इसके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए तुलसी जन्मभूमि को पर्यटक स्थली के रूप में विकसित कर सौन्दर्यीकरण किया जाय तथा विश्व के पर्यटन सूची में इसे सन्दर्भित कराया जाय जिससे यह पावन ऐतिहासिक स्थल भक्त जनों तथा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन सकें। महती कृपा होगी।

भवदीय

(डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य)
अध्यक्ष
मो0–09452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर, चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0)
श्री तुलसी जन्मभूमि, राजापुर सूकरखेत, जनपद गोण्डा (उ0प्र0)

दिनांक 25.04.2016

सेवा में,

माननीय रेल मंत्री जी,
रेल भवन,
भारत सरकार, नई दिल्ली–110001

महोदय,

निवेदन है कि भारत के महान संत और महाकवि गोस्वामी श्री तुलसीदास जी के नाम पर एक एक्सप्रेस गाड़ी सं0–11069 तुलसी एक्सप्रेस लोकमान्य तिलक टर्मिनल (एल.टी.टी.) मुम्बई से इलाहाबाद तक सप्ताह के 2 दिन चलती है। इस संदर्भ में मेरा अनुरोध है कि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्मभूमि अयोध्या के समीप गोण्डा जिले के सूकरखेत स्थित राजापुर एक ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटक स्थली के रूप में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ देश के कोने–कोने से श्रद्धालु, भक्तगण, शोधार्थी पधारते हैं। इसके साथ ही विदेश के पर्यटकगणों का भी दर्शनार्थ इस स्थल पर बराबर आवागमन बना रहता है। इसलिये इस गाड़ी का विस्तार पूर्वोत्तर रेलवे के गोण्डा जंक्शन तक कर दिया जाना उपयुक्त होगा। यह गाड़ी इलाहाबाद से सुल्तानपुर–फैजाबाद होती हुई गोण्डा जा सकती है। इसी लाइन पर एक इन्टरसिटी इलाहाबाद से गोण्डा के बीच चलाई जा रही है। इसके साथ ही यह भी अनुरोध है कि इस गाड़ी को नियमित प्रतिदिन चलाने की व्यवस्था की जाय।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इस आवेदन पर सदाशयतापूर्वक निर्णय देने की अवश्यमेव कृपा करेगें।

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

(डा0 स्वामी भगवदाचार्य)
अध्यक्ष
मो0नं0–09452270370

'मानस साहित्य जगत की अनुपम निधि'

धूमधाम से मनाई गोस्वामी तुलसीदास की जयंती, आरएसएस ने तुलसीजन्म भूमि को गोद लिया

अमर उजाला ब्यूरो

गोंडा में तुलसी जयंती पर सरस्वती विद्या मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद बच्चे एवं (दाएं) पंसका स्थित सूकर खेत में तुलसी जयंती पर आयोजित गोष्ठी में विचार रखते भगवदचार्य।

परसपुर गोंडा। मेरे द्वारा जितनी भी मदद हो सकेगा तन, मन व धन से इस ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थली के लिए हर संभव मदद करूंगा। मुझे देख कर काफी दुख हो रहा है कि अपनी लेखनी व मानस से संपूर्ण जगत को रास्ता दिखाने वाले गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली आज अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा कर लोगों को कोस रही है।

इस स्थली के संपूर्ण विकास के लिए ईमानदारी के साथ स्थानीय जनों व नेताओं को ठोस रणनीति बनानी चाहिए। उपरोक्त बातें बुधवार को सनातन धर्म परिषद् एवं तुलसी जन्म भूमि न्यास द्वारा तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत में तुलसी जयंती के अवसर पर आयोजित गोष्ठी में भाजपा नेता रामभजन चौबे ने कहीं। उन्होंने इस स्थली के विकास के लिए लोगों को बढ़ चढ़ कर भाग लेने का आह्वान भी किया। प्रमोद मिश्र ने कहा कि तुलसी दास जी विश्व मानवता के रक्षक थे। कृषि वैज्ञानिक संतकुमार त्रिपाठी ने कहा कि यहां के लोग धन्य हैं कि वे गोस्वामी जी के जन्मभूमि पर पैदा हुए। उनके द्वारा रचित मानस को आज पूरे विश्व में पूजा जाता है।

यह स्थली अपने गरिमा को अभी तक नहीं पा सकी है। जो चिंता का विषय है। राम सुंदर पांडेय, साहित्यकार डॉ. हनुमान प्रसाद दूबे, कैलाश नाथ वर्मा, एके सिंह आदि ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता कर रहे आरएसएस के जिला कार्यवाह तथा प्रधान ओमप्रकाश पाण्डेय ने इस स्थली तथा गावं को गोद लेने की घोषणा करते हुए कहा कि अब यहां अध्यात्म, रोजगार, कृषि, युवाओं के स्वावलंबन व व्यक्तित्व विकास के लिए कार्य किया जाएगा। युवाओं को संस्कारित कर संघ की शाखा लगायी जाएगी।

आरएसएस के जिला प्रचारक तुलसीराम, गिरीश नारायण सिंह बबलू सिंह, गोमती सिंह, अशोक सिंह, वीरेंद्र बहादुर सिंह, ओमकार सिंह, सांवल चौधरी, कन्हैया लाल पाण्डेय, रघुनाथ मिश्रा सहित बड़ी संख्या में लोग शामिल रहे। वहीं सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज में गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती पर श्रीराम चरित मानस पर आधारित दोहा-चौपाई प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित मानस प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में सर्वेश मिश्र द्वादश क प्रथम, हिमांशु द्विवेदी दशम ख द्वितीय, अभय सिंह दशम ख तृतीय स्थान पर रहे, जबकि जूनियर वर्ग में शुभम मिश्र अष्टम ख प्रथम, सौरभ मिश्र अष्टम ग द्वितीय, उपदेश नारायण षष्ठ क तृतीय स्थान पर रहे। इन प्रतिभागियों को प्रधानाचार्य प्रवीण कुमार श्रीवास्तव ने पुरस्कृत किया।

केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद्
(आयुष मंत्रालय भारत सरकार)
61-65, संस्थागत क्षेत्र, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
Central Council for Research in Yoga & Naturopathy
(Ministry of AYUSH, Govt. of India)
61-65, Institutional Area, Janakpuri, NEW DELHI –110058

Ph: 011- 28520429, 30, 31, 32
Fax: 28520435
E-mail: director-ccryn@nic.in
ccryn.goi@gmail.com
Website: www.ccryn.org

7-4/2012-13/CCRYN/Grievances/Part-II - 2321 Dated: 03.09.2015

सेवा मे,

डॉ. स्वामी भगवदाचार्य,
अध्यक्ष,
श्री पतंजली जन्मभूमि न्यास,
सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमला),
चिनहट, लखनऊ, उत्तरप्रदेश

विषय: **माननीय प्रधानमंत्री भारत सरकार को लिखे पत्र के संदर्भ में।**

महोदय,

माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार को दिनांक 06.07.2015 को आपके लिखे पत्र के संदर्भ मे मुझे कहने का आदेश हुआ है कि योग में विशेष रुचि रखने के लिए आपके आभारी हैं।

महर्षि पतंजलि अंतर्राष्ट्रीय योग विश्वविद्यालय की स्थापना करना आदि परिषद के कार्य क्षेत्र के बाहर है। परंतु इसके प्रति परिषद अपनी कोशिश करेगी।

केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद मुख्यत: योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का ही प्रचार और प्रसार का कार्य करती है। यह परिषद योग एवम प्राकृतिक चिकित्सा में अनुसंधान कर इनका उपयोग सुनिश्चित करती है।

यदि आप योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा में रुचि रखते हैं। तो हमारी वेब साइट www.indianmedicine.nic.in, और www.ccryn.gov.in संपर्क कर जानकारी ले सकते हैं।

भवदीय

भांडारकर

(डॉ सुरेश भांडारकर)
सहायक निदेशक(योग)
कृते निदेशक

विधान सभा के द्वितीय सत्र, 2010 के प्रथम मंगलवार हेतु निर्धारित श्री राम विशुन आजाद, मा0 सदस्य, विधान सभा द्वारा पूछे गये अतारांकित प्रश्न संख्या–105 का उत्तर।

****

प्रश्न	उत्तर
105– क्या माध्यमिक शिक्षा मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि गोस्वामी तुलसीदास जी की जन्म स्थली गोण्डा के संबंध में सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 इलाहाबाद द्वारा अपने पत्रांक मा0शि0प0/पा0पु0रा0/273, दिनांक 8.3.08 द्वारा संस्थापक अध्यक्ष, सनातन धर्म परिषद एवं तुलसी जन्म भूमि सूकर खेत विकास समिति चिनहट, लखनऊ को अवगत कराया गया है कि उनके द्वारा पत्र में उठाये गये बिन्दुओं का परीक्षण करने के उपरान्त यू0पी0 बोर्ड इण्टर मीडियेट की हिन्दी पाठ्य पुस्तक काव्यांजलि और हाईस्कूल की हिन्दी पाठ्य पुस्तक काव्य संकलन में सूकर खेत (आजमगढ़) को त्रुटि पूर्ण मानते हुए सूकर खेत (गोण्डा) का नामोल्लेख कर दिया गया है ?	जी हाँ। शैक्षिक सत्र 2010–11 में इण्टरमीडिएट की हिन्दी पाठ्य पुस्तक "काव्यांजलि" एवं हाईस्कूल की "काव्य संकलन" पाठ्य पुस्तक की जो आदर्श प्रतियाँ चयनित प्रकाशकों से प्राप्त हुई थी, उनमें डा0 नागेन्द्र द्वारा लिखित "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में उल्लिखित तथ्यों के आधार पर "सूकरखेत" को गोण्डा जिले में अवस्थित होने के निर्देश दिये गये थे। तदनुसार चयनित प्रकाशकों द्वारा इसे संशोधित कर दिया गया है।
यदि नहीं, तो क्यों ?	प्रश्न नही उठता।

रंगनाथ मिश्र,
मंत्री,
माध्यमिक शिक्षा।

दिनांक – 10-8-10

श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0) भारत
पतंजलिपुरी, श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) भारत

दिनांक–

सेवा में,

श्रीमान प्रमुख सचिव महोदय,
पर्यटन विभाग, उ0प्र0 शासन,
लखनऊ।

विषय–श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) में पतंजलि झील के सौन्दर्यीकरण एवं पर्यटकों के लिए नौका विहार की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद के तत्वावधान में योग प्रणेता महर्षि पतंजलि की जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा का विकास किया जा रहा है। महर्षि पतंजलि की जन्मभूमि होने से अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी गरिमा प्रतिष्ठापित है। देश विदेश के लोग पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र के दर्शनार्थ बराबर आते रहते है। गोण्डा से 30 किलोमीटर दक्षिण और अयोध्या से 20 किलोमीटर उत्तर पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र स्थित है। पतंजलि जन्मभूमि में साढ़े तीन किलोमीटर पतंजलि झील प्रवाहित है। यदि पतंजलि झील का सौन्दर्यीकरण करा दिया जाय और झील के किनारे उपयुक्त वृक्ष रोपित करा दिये जायँ तो पतंजलि झील दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बन जायेगा। पर्यटकों के लिए पतंजलि झील में नौका विहार हेतु करीब 10–12 नौका की व्यवस्था हो जाने से पर्यटकों का आकर्षण बढ़ जायेगा।

अतएव आपसे सादर विनम्र अनुरोध है कि पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) में पतंजलि झील का सौन्दर्यीकरण कराकर पर्यटकों के लिए नौका विहार हेतु नौका की सुविधा उपलब्ध कराने का कष्ट करें। महती कृपा होगी।

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0–09452270370

श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0) भारत
पतंजलिपुरी, श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) भारत

दिनांक–

सेवा में,

श्रीमान प्रमुख सचिव महोदय,
पर्यटन विभाग, उ0प्र0 शासन,
लखनऊ।

विषय–श्री पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) में पतंजलि झील के सौन्दर्यीकरण एवं पर्यटकों के लिए नौका विहार की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद के तत्वावधान में योग प्रणेता महर्षि पतंजलि की जन्मभूमि कोंड़र (वजीरगंज) जनपद–गोण्डा का विकास किया जा रहा है। महर्षि पतंजलि की जन्मभूमि होने से अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी गरिमा प्रतिष्ठापित है। देश विदेश के लोग पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र के दर्शनार्थ बराबर आते रहते है। गोण्डा से 30 किलोमीटर दक्षिण और अयोध्या से 20 किलोमीटर उत्तर पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र स्थित है। पतंजलि जन्मभूमि में साढ़े तीन किलोमीटर पतंजलि झील प्रवाहित है। यदि पतंजलि झील का सौन्दर्यीकरण करा दिया जाय और झील के किनारे उपयुक्त वृक्ष रोपित करा दिये जायँ तो पतंजलि झील दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र बन जायेगा। पर्यटकों के लिए पतंजलि झील में नौका विहार हेतु करीब 10–12 नौका की व्यवस्था हो जाने से पर्यटकों का आकर्षण बढ़ जायेगा।

अतएव आपसे सादर विनम्र अनुरोध है कि पतंजलि जन्मभूमि कोंड़र जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) में पतंजलि झील का सौन्दर्यीकरण कराकर पर्यटकों के लिए नौका विहार हेतु नौका की सुविधा उपलब्ध कराने का कष्ट करें। महती कृपा होगी।

भवदीय

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0–09452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0) भारत
तुलसीधाम, श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर (सूकरखेत) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) भारत

दिनांक– 15-11-2016

सेवा में,

मानननीय श्री प्रकाश जावड़ेकर मंत्री जी,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली

विषय–गोस्वामी तुलसीदास अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बन्ध में।

महोदय,

निवेदन है कि श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद के संयुक्त तत्वावधान में तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत जनपद गोण्डा (उ0प्र0) का विकास किया जा रहा है। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस पावन भूमि में जन्म लेकर अपने अमर महाकाव्य श्रीरामचरितमानस के द्वारा समूचे विश्व को उपकृत किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी के सम्मान में तुलसी जन्मभूमि राजापुर गोण्डा में गोस्वामी तुलसीदास अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित कराने का कष्ट करें ताकि देश–विदेश से पधारे पर्यटक, शोधार्थी एवं भक्तगण तुलसी साहित्य और श्रीरामचरितमानस पर अनुसंधान कर सकें। इससे भारत ही नहीं पूरे विश्व में श्रीमानस एवं तुलसी के प्रति लोगो में समादृत की भावना जागृति होगी।

अतः आपसे सादर अनुरोध है कि तुलसी जन्मभूमि अयोध्या के निकट गोण्डा जनपद के सूकरखेत स्थित सरयू तट तुलसीधाम राजापुर में गोस्वामी तुलसीदास अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना कराने का कष्ट करें। इस कार्य से आप पुण्य एवं यश के भागी होंगे।

महती कृपा होगी।

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0–09452270370

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास द्वारा स्थापित
विश्व तुलसी पीठ की केरल शाखा
निम्नलिखित पदाधिकारियों के साथ गठित
की जाती है –

अध्यक्ष – डा० एन. चन्द्रशेखरन नायर
(अध्यक्ष, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी
तिरुअनन्तपुरम)

उपाध्यक्ष – के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
(पूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा)

महासचिव – डा० एस. तंकमणि अम्मा
(पूर्व डीन, प्राच्य विद्या संकाय
केरल विश्वविद्यालय
एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
केरल विश्व विद्यालय के
एवं
पूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा)

सचिव – डा० पी. लता
(असोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी)
सरकारी वनिता कालेज
तिरुअनन्तपुरम)

कुछ अन्य सदस्यों को भी प्रान्तीय शाखा की कार्यकारिणी समिति में नामित कर लेने का अधिकार शाखा के अध्यक्ष/महासचिव को प्रदान किया जाता है।

स्वामी भगवदाचार्य

तिरुअनन्तपुरम

डा० स्वामी भगवदाचार्य
अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष
सनातन धर्म परिषद्
श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास
विश्व तुलसी पीठ, लखनऊ

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता) चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0) भारत
तुलसीधाम, श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर (सूकरखेत) जनपद–गोण्डा (उ0प्र0) भारत

दिनांक– 09.07.2016

सेवा में,

माननीय श्री महेश शर्मा जी,
पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री,
भारत सरकार नई दिल्ली

विषय– अयोध्या की 84 कोसी परिक्रमा को पिच रोड कराने के सम्बन्ध में।

महोदय,

मानवता की उद्‌गम स्थली अयोध्या भगवान श्रीराम एवं श्रीमानस की अवतार भूमि रही है। अयोध्या की महिमा पुरातन काल से सुविख्यात है। चैत कृष्ण प्रतिपदा से 84 कोसी परिक्रमा प्रतिवर्ष विशाल जनसमूह में संत–महात्मा, श्रद्धालुगण एवं भक्तगणों द्वारा परम्परागत आयोजित होती है। इस परिक्रमा में तीन प्रमुख पौराणिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटक स्थल सम्मिलित हैं। श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की जन्मस्थली अयोध्या के पास गोण्डा जनपद में सूकरखेत राजापुर, द्वितीय मखौड़ा जनपद बस्ती जहाँ चक्रवर्ती दशरथ जी ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था और तृतीय भरत की तपस्थली भरतकुण्ड (नन्दिग्राम) जनपद फैजाबाद में स्थित है। 84 कोसी परिक्रमा सुव्यवस्थित न होने से भक्त जनों को यात्रा में महान कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि इस परिक्रमा को पिच रोड (पक्की सड़क) के रूप में निर्मित करा दिया जाय तो भक्त जनों को यात्रा में सुख सुविधा अनायास प्राप्त हो जायेगी।

अतएव आपसे सादर अनुरोध है कि अयोध्या की गरिमा एवं महिमा को देखते हुए 84 कोसी परिक्रमा को पिच रोड कराने का अवश्यमेव कष्ट करें।

महती कृपा होगी।

भवदीय

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य

मो0–09452270370

श्री सीताराम विवाह महोत्सव, तुलसीधाम

श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद् के तत्वावधान में आगामी 04 दिसम्बर 2016 को श्री सीताराम विवाहोत्सव के पावन अवसर पर श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर सूकरखेत गोण्डा में एक विशाल श्रीराम महायज्ञ, श्री रामचरितमानस पाठ, श्री सीताराम नाम संकीर्तन तथा भजन–संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 13 दिसम्बर 2016 मार्गशीर्ष पूर्णिमा को समापन होगा। कार्यक्रम में देश के कोने–कोने से संत–महात्मा, मानस–मनीषी एवं तुलसी मर्मज्ञ विद्वानों का पादार्पण होगा। आयोजन में यज्ञ एवं प्रवचन के बाद श्रीराम लीला का आयोजन सुनिश्चित है। यज्ञ को मूर्त रूप देने के लिए श्री तुलसी दास याज्ञिक, श्री राम किशोर दास कर्मकाण्डी और श्री रामानुज मानस विनम्र का सक्रिय सहयोग रहेगा।

अतएव आप सभी धर्म प्रेमी महानुभावों से सादर अनुरोध है कि अपने समस्त इष्ट–मित्रों के साथ सपरिवार तुलसीधाम पधार कर विद्वानों के प्रवचन, यज्ञ की परिक्रमा और श्रीराम लीला का आनन्द प्राप्त कर जीवन को कृतार्थ करें। आपकी मंगलमयी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय
डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
कार्यालय आयकर आयुक्त-।
5-अशोक मार्ग,लखनऊ

क्र०सं०58-59/187/106/तक/आ०आ०-I/11-12/359 दिनांक:24-10-2011

आ दे श

विषयः- आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी (5)(VI)के तहत मान्यता (नियम 11AA (4) के अनुसार

सनातन धर्म परिषद, A-42,इन्द्रानगर,लखनऊ को इस कार्यालय के आदेश क्र०सं०58-59/558/ 77/11-12/तक०/ आ०आ०-I,लख दिनांक 27-04-2011 द्वारा उक्त संस्था/न्यास को आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी (5)((VI) के प्रयोजन के तहत मान्यता दी जाती है

उक्त मान्यता दिनांक 01-04-2011 से निम्नलिखित नियमों एवं शर्तो के अधीन दी जाती है:-

1. दाता को जारी की गई पावती में आदेश की तारीख एवं संख्या तथा वैधता का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।
2. उक्त संस्था/न्यास आयकर अधिनियम 1961 की धारा 139(4A) के अनुसार नियमित रुप से अपनी कर विवरणी दाखिल करेगा।
3. उक्त संस्था/न्यास अपने वर्तमान लक्ष्यों एवं उददेश्यों मे किसी भी प्रकार का अशोधन अथवा संशोधन बिना इस कार्यालय के पूर्व अनुमोदन के नहीं करेगा।
4. उपर्युक्त मान्यता की वैधता आयकर अधिनियम,1961की धारा 239C के प्रावधानों के आधीन है।

। आर०सी० शर्मा ।
आयकर आयुक्त-।,
लखनऊ

समसंख्यक एवं दिनांक

प्रतिलिपि प्रेषितः-

१. उपर्युक्त आवेदक को सूचनार्थ।
२. अपर आयकर आयुक्त,परिक्षेत्र-।,लखनऊ।
३. निर्धारण अधिकारी परिक्षेत्र-।(4) ,लखनऊ।

कार्यालय आयकर

। एस०के० लाल ।
आयकर अधिकारी ।मु०। तकनीकी
कृते आयकर आयुक्त-।,लखनऊ

विश्व साधु परिषद्

सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ (उ0प्र0)

सेवा में,

माननीय प्रधानमंत्री महोदय,
भारत सरकार, नई दिल्ली।

महोदय,

सादर अवगत कराना है कि भारतवर्ष में कई लाख साधु-सन्त समुदाय जो विभिन्न आश्रमों में रह कर साधनारत हैं, तथा मानव समाज को कर्तव्य परायण तथा समाज में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन सभी साधु-संतों जिसमें भारी संख्या में महिलायें भी शामिल हैं शासकीय योजनाओं से वंचित हैं, जबकि उन लोगों की आय नगण्य है। उन साधु-संतों के नाम कोई सम्पत्ति नहीं है। ये साधु-संत भी समाज के अंग हैं तथा नागरिक होने के नाते संविधान के अन्तर्गत जो प्रदत्त सुविधायें हैं, उनको पाने के लिये हकदार हैं। अधिकतर साधु-संत झुग्गी, झोपड़ी में ही प्रवास करते हैं। सरकार द्वारा ऐसी तमाम कल्याणकारी योजनायें चलाई जाती हैं, जिससे यह वर्ग अछूता है। इस वर्ग में हर जाति एवं सम्प्रदाय के लोग हैं। आजादी के बाद अब तक इस वर्ग के कल्याणार्थ कोई योजना संचालित नहीं की गयी है।

अतः हम सभी उपरोक्त विषय पर ध्यान आकर्षित करते हुये निवेदन करते हैं कि साधु-संतों के हिताय पेन्शन, आवास सुविधा, चिकित्सा सुविधा, रेल सुविधा निःशुल्क दिया जाय, जिससे कि यह वर्ग राष्ट्रीय धारा की योजनाओं से जुड़ सके। इस विषय वांछित कार्यवाही हेतु हम सभी आभारी रहेंगे।

दिनांक 16-3-2016

भवदीय

स्वामी भगवदाचार्य

(डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य)
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
विश्व साधु परिषद्,
सनातन धर्म परिषद्
मो0- 9452270370

SHRI PATANJALI JANMBHUMI NYAS

Sanatan Dharam Ashram, Sanatan Nagar (Kamta) Chinhat,
Lucknow-227105, U.P. India, Mob: 09452270370

To, Date : 18-12-2014

Shri Ban Ki Moon
H.E. the Secretary General
United Nations, 760, UN Plaza
New York, 10017, New York
United States of America

Sir,

Kudos to you and United Nations for declaring International Yoga Day to be observed on June 21. Yoga, as we know, is an ancient Indian system of meditation and self control. Yoga besides meditation, comprises of various exercises and postures which facilitates proper flow of oxygen in veins of human body.

Yoga was propounded by sage Patanjali about 5000 years ago. According to him Yoga strengthens the immunity systems of human mind and body. So the importance that has been given to Yoga by U.N. is in the interest of mankind.

You will be happy to know that the birth place of such a great sage Patanjali is village KONDAR (WAZEERGANJ) in Gonda district of U.P. in India. Several Sanskrit langauge, Bhoj Britt, and Raghavendra Charit have made a mention of it. Kondar is situated about 20 K.m. north of holi city of Ayodhya, the birth place of Lord Rama. The birth place of famous Hindi Poet Goswami Tulsidas- Rajapur (Sukarkhet) - is also situated about 40 K.m. North East of Konder.

Such an important place like Kondar is still not developed. It is a cultural place. Therefore, we request you to kindly declare this place a heritage site and develop it as a tourist place.

Thanking you,

Yours

(Dr. Swami Bhagavadacharya)
President

SHRI PATANJALI JANMBHUMI NYAS

Sanatan Dharam Ashram, Sanatan Nagar (Kamta) Chinhat,
Lucknow-227105, U.P. India, Mob.: 09452270370

Date : 25.04.2015

To,

Ms. Irina Bokova,
Director General,
UNESCO,
7 Place De Fontenoy 75007
Paris France.

Respected Madam,

We sincerely thank you for the initiative taken by you to bring in forefront Indian system of Yoga produced by Sage Patanjali for consideration by the Intangible Heritage Committee.

You will be happy to know that Sage Patanjali was born at **Village Kondar, near Ayodhya in Gonda District of U.P. India.** We have written a letter to Ban Ki Moon, Secretary General, United Nations to help **develop the birth place of Sage Patanjali as a heritage site** (Copy enclosed). You are also requested to contribute in the development of Village Kondar, the birth place of Sage Patanjali.

We have planned to observe **"International Yoga Day"** on June 21, at Village Kondar. A souvenir will be published on this occasion on the Philosophy and life of Patanjali.

We request you to kindly **send your message** to be published in Souvenir at the earliest.

Thanking you,

Yours,

(Dr. Swami Bhagavadacharya)
President

श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास

संनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर(कमता), चिनहट, लखनऊ, उ0प्र0

प्रेस नोट

संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की है। अन्ततः विश्व संस्था ने ध्यान, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की प्राचीन पद्धति योग की बढ़ती हुई लोक प्रियता को ध्यान में रखकर मानवजाति के कल्याण के निमित्त योग दिवस मनाने का निर्णय लिया है। इससे सम्बन्धित प्रस्ताव को 193 सदस्यों वाली महासभा में 177 सदस्य देशों का समर्थन मिला। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी बधाई के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने ही अपने पहले भाषण में संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग दिवस मनाने का प्रस्ताव दिया था।

योग विद्या के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं। उन्होंने योग सूत्र की रचना करके योग को शास्त्रीय रूप दिया। योग का महत्व लोगों ने स्वीकार कर लिया है। परन्तु योग के प्रणेता महर्षि पतंजलि के बारे में लोगों को कम जानकारी है। हमारे लिये और पूरे देश के लिये यह प्रसन्नता की बात है कि महर्षि पतंजलि गोण्डा जिले के पतंजलिपुरी कोंड़र गाँव के रहने वाले थे। पतंजलिपुरी कोंड़र अयोध्या से उत्तर लगभग 20 कि0मी0 पर स्थित है। यहीं पास में ही श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान राजापुर भी है।

महर्षि पतंजलि का जन्म स्थान गोण्डा जिले का पतंजलिपुरी कोंड़र गाँव है। इस सम्बन्ध में पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध हैं। महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र की रचना के अतिरिक्त पाणिनि की अष्टाध्यायी पर महाभाष्य की रचना की है। इस ग्रंथ में पतंजलि को "गोनर्दीय" कहा गया है, अर्थात् वे गोनर्द के रहने वाले थे। संस्कृत में गोण्डा को "गोनर्द" कहा जाता है। राघवेन्द्र चरित सर्ग-1 श्लोक-50 में ऐसा विवरण मिलता है कि पतंजलि का निवास सरयू के किनारे पतंजलिपुरी कोंडर गाँव में था। भोज वृत्ति के एक श्लोक के अनुसार महर्षि पतंजलि व्याकरण, आयुर्वेद और योग के अमूल्य ग्रंथों की रचना की थी। अब जब महर्षि पतंजलि के योग-सूत्र पर आधारित योग विद्या को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिल गयी है तो उनके जन्म स्थान का भी समुचित विकास होना चाहिये।

इसी बात को ध्यान में रखकर श्री पतंजलि जन्मभूमि न्यास एवं सनातन धर्म परिषद् ने पतंजलिपुरी कोंड़र में पतंजलि स्मारक का निर्माण कराया है, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। पतंजलिपुरी कोंड़र को हेरिटेज साइट मानकर इसका विकास पर्यटन स्थल के रूप में किया जाना चाहिये। यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय योग विश्वविद्यालय की स्थापना भी युक्ति संगत होगा। इस स्थान पर योग के साथ-साथ संस्कृत भाषा के अध्ययन, जड़ी-बूटियों की खेती तथा आयुर्वेदिक औषधियों का उत्पादन भी किया जा सकता है।

इस सम्बन्ध में हमने संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून को धन्यवाद देते हुये पत्र लिखा है और उनसे आग्रह किया है कि पतंजलि के जन्म स्थान पतंजलिपुरी कोंड़र को हेरिटेज साइट घोषित किया जाना चाहिये। इसके साथ ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव, केन्द्रीय संस्कृति मंत्री और प्रदेश के पर्यटन मंत्री को भी पत्र लिखा गया है।

इसी सिलसिले में जल्द ही एक सेमिनार का आयोजन किया जायेगा, जिसमें पतंजलिपुरी कोंड़र के विकास के बारे में चर्चा की जायेगी।

स्वामी भगवदाचार्य
डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष
मो0-9452270370

महर्षि पतञ्जलि कोंड़र, गोण्डा (उ0प्र0) भारत के थे।

डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, सनातन धर्म परिषद्

पतन्ति अञ्जलयोऽस्मिन् इति पतञ्जलिः अर्थात् जिस महापुरूष के लिये प्राणिमात्र श्रद्धा से नतमस्तक हो उसे पतञ्जलि कहते हैं। वे शेषावातार थे। पौराणिक कथनानुसार भगवान् शेष ने शेषशायी नारायण से अपने अमूल्य ज्ञान की सार्थकता हेतु प्रार्थना किया क्योंकि ज्ञानं भारः क्रियां बिना इस सिद्धान्तानुसार क्रियानुरूप के बिना कोई भी ज्ञान भार स्वरूप है। अतः उनकी प्रार्थना के अनुसार भगवान् श्री हरि ने उन्हें वचन दिया कि तुम द्वापर एवं कलि के संध्या काल में गोनर्द देश में अवतार लेकर शास्त्रों का प्रचार करोगे। पतञ्जलि महाभाष्य के अनुसार उन्हें गोनर्दीय बार–बार कहा गया है। गावः नर्दन्त्यस्मिन् अत्र वा इति गोनर्दः, गोनर्दे भवः गोनर्दीयः अर्थात् गोनर्द देश में जन्म लेने वाले को गोनर्दीय कहते हैं। गोनर्द शब्द का अर्थ विचार करते समय श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के प्रमाणानुसार त्रिजट नाम के ब्राह्मण दीनता से दुखी होकर प्रभु श्रीराम से याचना किया और कहा कि मैं परिवारी हूँ धन के अभाव में मेरा परिवार दुख भोग रहा है, आप हमें उचित वृत्ति प्रदान करें। प्रभु ने कहा कि आप अपने डण्डे को सरयू के उस पार फेंकें जहां तक डण्डा जायेगा वहां तक के भूमि के आप स्वामी होंगे। रामायण के अनुसार उस क्षेत्र में चक्रवर्ती अयोध्या नरेश की गोशाला अथवा गोचारण भूमि थी। ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर पूरी शक्ति से डण्डे का प्रक्षेपण किया जहां तक डण्डा गया वह क्षेत्र गोनर्द के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीराम ने समस्त भूमि वहां तक की प्रदान कर दिया। असीमित सम्पत्ति प्राप्त कर ब्राह्मण की गावः इन्द्रियाणि नर्दन्ति हर्षातिरेकं आप्नुवन्ति यत्र स देशः गोनर्द तत्र भवः गोनर्दीयः पतञ्जलिः।

कई विद्वान् योगदर्शन के प्रणेता पतञ्जलि, महाभाष्यकार पतञ्जलि और आयुर्वेद के चरक को एक ही व्यक्ति मानते हैं। इसका प्रमाण भोजवृत्ति का यह श्लोक है–

योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्
मलं शरीस्य च वैद्यकेन
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनाम्
पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोस्मि।

अर्थात् जिसने योग शास्त्र के द्वारा चित्त के मल को दूर किया। पदशास्त्र (व्याकरण शास्त्र) के द्वारा शब्दों के दोष को दूर किया और वैद्यक शास्त्र (आयुर्वेद शास्त्र) के द्वारा शरीर के मलों को दूर किया। उस पतञ्जलि को प्रणाम है। यह श्लोक पतञ्जलि के सर्वतोमुखी वैदुष्य को प्रकट करता है।

व्याकरण शास्त्र के ऐतिहासिक समीक्षा करने वाले विद्वानों का मत है कि यही त्रिजट ब्राह्मण ही पतञ्जलि के रूप में गोनर्द देश में अवतरित हुआ। उनका मत है कि 1–सूत्रकार 2–वृत्तिकार 3– भाष्यकार यही तीन उस त्रिजट ब्राह्मण के तीन जटाओं के प्रतीक है। यही कारण है कि पतञ्जलि का पातञ्जल भाष्य समस्त विश्व वाङ्मय में अनोखा ग्रन्थ है। उसके विषय प्रतिपादन शैली सर्वथा भिन्न है। इस शैली का दूसरा ग्रन्थ कहीं नहीं है, जिसमें सूत्रकार, वृत्तिकार एवं भाष्यकार तीनों के मत का यथास्थान औचित्यपूर्ण एवं विशद विवेचन किया गया है। इस प्रकार दोनों आख्यानों के आधार पर गोनर्द देश में पतञ्जलि का जन्म सर्वथा सिद्ध है। गोनर्द भूमि को पाकर उस सरयू ने अपनी चञ्चलता का परित्याग कर दिया। आगे चलकर गोनर्द भूमि को भगवान् शेष के अवतार परम महात्मा, वाग्योग के ज्ञाता, योगियों में श्रेष्ठ पतञ्जलि अलंकृत करेंगे, ऐसा सोचकर सरयू भक्ति से नम्र हो गयी।

गोनर्दभूमिं समवाप्य तूर्णमौद्धत्यमात्मानुगतं मुमोच।
अनन्तमूर्तिः परमो महात्मा वाग्योगविद् योगविदां वरेण्यः।
पतञ्जलिर्भूमिमलङ्करिष्णुर्ध्यात्वैवभक्त्यावनता बभूव।।
राघवेन्द्रचरित, सर्ग. 1 श्लोक.50

अयोध्या से उत्तर एवं तुलसी जन्मस्थली राजापुर सूकरखेत, गोण्डा के पूर्वोत्तर में स्थित कोंड़र ग्राम ही महर्षि पतञ्जलि का जन्म स्थान मानना प्रामाणिक होगा। कोंड़र ग्राम गोण्डा जनपद के वजीरगंज विकास क्षेत्र के सन्निकट है। ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर पतञ्जलि पर्दे के अन्दर से शिष्यों को ज्ञानोपदेश करते थे। नवें दिन शिष्यों ने पर्दे के कोने से झांका, तब सर्पाकार पतञ्जलि अदृश्य हो गये। कोणेन कोणदर्शनेन रीयते क्षीयते पतञ्जलिः यत्र स कोंड़र इति अर्थात् शिष्यों के कोने से झांकने पर जहां महर्षि पतञ्जलि अदृश्य हो गये थे वह पवित्र स्थल कोंड़र नाम से आज भी गोण्डा में वजीरगंज के निकट प्रसिद्ध है। गोनर्द शब्द का अपभ्रंश ही गोण्डा वर्तमान काल में होता है। अतः पतञ्जलि का जन्म स्थान गोण्डा में होने के प्रमाण न्याय एवं युक्ति सिद्ध है। वहां स्थित कोंड़र तालाब महर्षि के अगाध ज्ञान का प्रतीक है। क्योंकि ज्ञान एवं भक्ति की प्राप्ति प्रायः जीवात्मा एवं परमात्मा का मिलन प्रायः नदी और तालाब के किनारे ही होता रहा है, जैसेः पम्पा सरहि जाहु रघुराई, तहं होइहैं रघुवीर मिताई! पंपा पापात्मानं जीवं पाति रक्षति इति पंपा पाति वा परित्राण आत्मलाभ अथवा भगवद्भक्ति से ही सम्भव है। अतः यह सरोवर गुरु शिष्य भक्ति अथवा उनके अगाध ज्ञान का प्रतीक है।

की वृत्तियों के निरोध को ही योग कहा गया है। जब समस्त चित्त की वृत्तियां अन्तर्मुखी होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में ब्रह्माकाराकारित वृत्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है। योग के आठ अंगों को चर्चा विधिवत ढंग से संदर्भित किया गया है।

यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यो ष्टावंगनि

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतयाहार, धारणा, ध्यान और समाधि आठ योग के अंग हैं। भारतीय दर्शन सदैव से भोग से योग की ओर उन्मुख करने का प्रयास किया है। यह संसार बहुत ही मनोरम एवं रमणीय है। बड़े-बड़े सायधक भी इसकी रमणीयता से अपने को अलजग कर पाने में असमर्थ दिखायी पड़ते हैं।

भगवतगीता के अठारहवें अध्याय में संकेत किया गया है कि-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूमिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जिस व्यक्ति में योग के गुण अत्यधिक रूप में आत्मसात होते रहते हैं उसमें आत्मिक बल, आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत अनायास ही उमड़ पड़ता है। भगवान श्रीराम को विभीषण रथहीन देख कर हतोत्साह हो गया था उस समय भगवान श्रीराम ने आत्मिक बल का उद्घोष किया-

शौरज धीर जाहि रथ चाका। सत्य शील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल विवेक दम परहित घोरे। क्षमा दय ससमता रजु जोर।।
ईश भजन सारथी सुजाना। विरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परशु बुद्धि शक्ति प्रचण्डा। घर विज्ञान कठिन को दण्डा।
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके।

पतंजलि महाकाव्य के अनुसार उन्हें गोनर्दीय बार-बार कहा गया है गावः नर्दन्त्यस्मिन् अत्र वा इति गोनर्दः, गोनर्दे भवः गोनर्दीयः अर्थात् गोनर्द देश में जन्म लेने वाले को गोनदीय कहते हैं। गोनर्द शब्द का अर्थ विचार करते समय श्री स्वामी करपात्री जी महराज के प्रमाणानुसार त्रिजट नाम के ब्राह्मण दीनतासे दुखी होकर प्रभु श्रीराम से याचना किया और कहा कि मैं परिवारी हूं धन के अभाव में मेरा परिवार दुख भाग रहा है आप हमें उचित वृत्ति प्रदान करें। प्रभु ने कहा कि आप अपने डण्डे को सरयू के उस पार फेंके जहां तक डण्डा जायेगा वहां तक की भूमि के आप स्वामी होंगे। रामायण के अनुसार उस क्षेत्र में चक्रवर्ती अयोध्या नरेश की गोशाला अथवा गोचारण भूमि थी। ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर पूरी शक्ति से डण्डे को प्रक्षेपण किया जहां तक डण्डा गया वह क्षेत्र गोनर्द के नाम से प्रसिद्ध है। श्रीराम ने समस्त भूमि वहां तक की प्रदान कर दिया। असीमित सम्पत्ति प्राप्त कर ब्राह्मण की गावः इन्द्रियाणि नर्दन्ति हर्षातिरके आप्लुदन्ति यत्र स देशः गोनर्द तत्र भवः गोनर्दीयः पतंजलिः।

कई विद्वान योगदर्शन के प्रणेता पतंजलि महाभाष्यकार पतंजलि और आयुर्वेद के चरक को एक ही व्यक्ति मानते हैं। इसका प्रमाण भोजवृत्ति का यह श्लोक है-

योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्
मलं शरीस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनाय
पतंजलि प्राज्जलिरानतोस्मि।

अर्थात जिसने योग शास्त्र के द्वारा चित्त के मल को दूर किया। पदशास्त्र (व्याकरण शास्त्र) के शब्दों के दोष को द ूर किया और वैद्यक शास्त्र (आयुर्वेद शास्त्र) के द्वारा शरीर के मलों के दूर किया। उस पतंजलि को प्रणाम है। यह श्लोक पतंजलि के सर्वतोमुखी वैदुष्य को प्रकट करता है। व्याकरण शास्त्र के ऐतिहासिक समीक्षा करने वाले विद्वानों का मत है कि वही त्रिजट ब्राह्मण ही पतंजलि के रूप में गोनर्द देश में अवतरित हुआ। उनका मत है कि सूत्रकार, वृत्तिकार, भाष्कयार यही तीन उस त्रिजट ब्राह्मण के तीन जटाओं के प्रतीक हैं। यही कारण है कि पतंजलि का पातंजल भाष्य समस्त विश्व वागंगय में अनोखा ग्रंथ है। उसके विषय प्रतिपादन शैली सर्वथा भिन्न हैं। इस शैली का दूसरा ग्रंथ कहीं नहीं है, जिसमें सूत्रकार, वृत्तिकार एवं भाष्यकार तीनों के मत का यथास्थान औचित्यपूर्ण एवं विशद विवेचन किया गया है। इस प्रकार दोनों आख्यानों के आधार पर गोनर्द देश में पतंजलि का जन्म सर्वथा सिद्ध है। 'मथुरायाः पाटलिपुत्र पूर्व' से गोनर्द मथुरा से पूर्व तथा पाटलिपुत्र के बीच होना चाहिए। पतंजलि ने पुष्यमित्र शुंग का दो बार अश्वमेघ यज्ञ अयोध्या में कराया था। 'इह पुष्यमित्रं याजयामः' जिसके एक शिलालेख अयोध्या से प्राप्त है। गोनर्द भूमि को पाकर उस सरयू ने अपनी चंचलता का परित्याग कर दिया। आगे चल कर गोनर्द भूमि को भगवान शेष के अवतार परम महात्मा वाग्योग के ज्ञाता, योगियों में श्रेष्ठ पतंजलि अलंकृत करेंगे ऐसा सोचकर सरयू भक्ति से नम्र हो गयी।

गोनर्दभूमिं समवाम्य तूणमौद्धत्यमात्मानुगतं मुमोच।
अनन्तमूर्तिः परमो महात्मा वाग्योगविद् योगविदां वरेण्यः।
पतंजलिर्भूमिमलंग करिष्णुर्ध्यात्वैवभत्यावनता वभूव।।

राघवेन्द्रचरित वर्ग 1 श्लोक 50

अयोध्या से उत्तर एवं तुलसी जन्मस्थली राजापुर सूकरखेत, गोण्डा के पूर्वोत्तर में स्थित कोंडर ग्राम ही महर्षि पतंजलि का जन्मस्थान मानना प्रमाणिक होगा। करोडर ग्राम गोण्डा जनपद के वजीरगंज विकास क्षेत्र के सन्निकट है। ऐतिहासिक साक्ष्य के आधार पर पतंजलि पर्दे के अन्दर शिष्यों को ज्ञानोपदेश करते थे। नवें दिन शिष्यों ने पर्दे के कोने से झांका तब सर्पाकार पतंजलि अदृश्य हो गये। कोणेन कोणदर्शनेन रीयते क्षीयते पतंजलिः यत्र स कोंडर इति अर्था शिष्यों के कोने से झांकने पर जहां महर्षि पतंजलि अदृश्य हो गय वह पवित्र स्थल नाम से आज भी गोण्डा में वजीरगंज के निकट प्रसिद्ध है। गोनर्द शब्द का उ पभ्रंश ही गोण्डा वर्तकमान काल में होता है। अतः पतंजलि का जन्म स्थान गोण्डा में होने के प्रमाण न्याय एवं युक्ति सिद्ध है। व्रहां स्थित कोंडर तालाब महर्षि के अगाध ज्ञान का प्रतीक है, क्योंकि ज्ञान एवं भक्ति की प्राप्ति प्रायः जीवात्मा एवं परमात्मा का मिलन प्रायः नदी और तालाब के किनारे ही होता रहा है। जैसे पम्पा सरहि जाहु रघुराई, तहं होइहै रघुवीर मिताई। पंपा पापात्मानं जीवं पाति रक्षति इतिह पंपा पाति व परित्राण आत्मलाभ अथवा भगवद्भक्ति से ही संभव है। अतः यह सरोवर गुरु शिष्य भक्ति अथवा उनके अगाध ज्ञान का प्रतीक है। ❑

जुलाई-अगस्त 2015
₹-15
www.mediamanch.in
मीडिया मंच
सम्पूर्ण समाचार पत्रिका
ग्रामीण-भारत
की
असलियत
मिलते है बार-बार बिखरने के लिए

मीडिया मंच

वर्ष 18 अंक 03-04

संपादक
तेज बहादुर सिंह

समाचार संपादक
वीरेन्द्र शुक्ल

वरिष्ठ फोटोग्राफर
योगी

मार्केटिंग
सिग्मा ट्रेड विंग्स

स्वात्वाधिकारी 'मीडिया मंच पब्लिकेशन्स' के लिए प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक टी.बी. सिंह द्वारा प्रिंट आर्ट, कैन्ट रोड, लखनऊ से मुद्रित तथा जी-7, खुशनुमा कॉम्पलेक्स, 7-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

RNI No. : UPHIN/1998/5628

समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा

वेबसाइट : www.mediamanch.in

ई-मेल : mediamanch@ymail.com
tejsingh007@yahoo.com

फैक्स/दूरभाष-0522-4070984
मोबाइल-09415000151

स्थायी स्तम्भ

कुशल-मंगल	3
अतिथि	4
स्वास्थ्य सूत्र	27
ब्यूरोक्रेसी	32
ऐसा भी होता है	35
समाचार सार	41
खेल	42
यूपीनामा	48

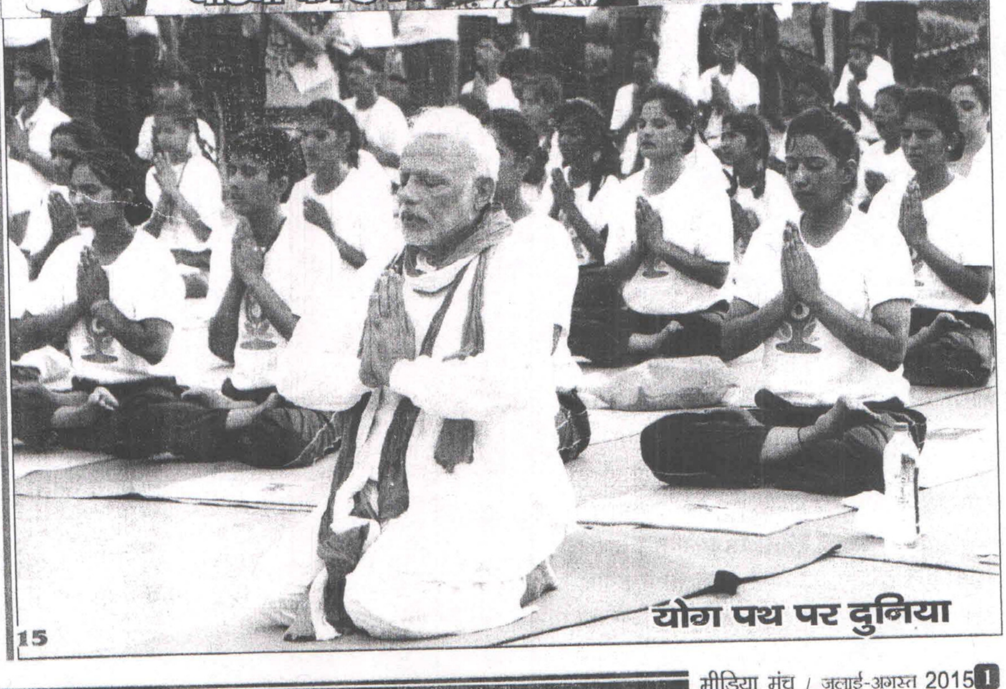

तृतीय विश्व साधु सम्मेलन
विश्व साधु परिषद्

समादरणीय संत वृन्द!

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्री रामभद्र की महती अनुकम्पा से **तृतीय विश्व साधु सम्मेलन** का आयोजन **10 एवं 11 सितम्बर 2016** को दिल्ली में विश्व साधु परिषद के तत्वाधान में आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में बड़ी संख्या में साधु–संत उपस्थित होंगे। इस सम्बन्ध में प्रथम सम्मेलन श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर, सूकरखेत, जनपद गोण्डा एवं द्वितीय सम्मेलन राम नगरिया, जनपद फरूखाबाद में किया गया था जिसमें हजारों की संख्या में साधु–संतों ने अपनी उपस्थिति अंकित की थी।

सादर अवगत कराना है कि समस्त भारत में करोड़ों की संख्या में साधु–संत समुदाय जो विभिन्न आश्रमों में रह कर साधनारत हैं, तथा मानव समाज को कर्त्तव्य परायण तथा समाज में भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने की दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं। उन सभी साधु–संतों जिसमें भारी संख्या में साध्वी महिलाएँ भी शामिल हैं, शासकीय योजनाओं से वंचित हैं, जबकि उन लोगों की आय नगण्य है। उन साधु–संतों के नाम कोई सम्पत्ति नहीं है। ये साधु–संत भी समाज के अंग हैं तथा नागरिक होने के नाते संविधान के अन्तर्गत जो प्रदत्त सुविधाएँ हैं, उनको पाने के लिये हकदार हैं। अधिकतर साधु–संत झुग्गी, झोपड़ी में ही प्रवास करते हैं। सरकार द्वारा ऐसी तमाम कल्याणकारी योजनाएँ चलाई जाती हैं, जिससे यह वर्ग अछूता है। इस वर्ग में हर जाति एवं सम्प्रदाय के लोग हैं। आजादी के बाद से अब तक इस वर्ग के कल्याणार्थ कोई योजना संचालित नहीं की गयी है।

अतः हम सभी उपरोक्त विषय पर सरकार का ध्यान आकर्षित करते हुए निवेदन करते हैं कि साधु–संतों के हिताय पेन्शन, आवास सुविधा, चिकित्सा सुविधा, परिवहन सुविधा एवं रेल सुविधा निशुल्क दिया जाए, जिससे कि यह वर्ग राष्ट्रीय धारा की योजनाओं से जुड़ सके। इस हेतु दिल्ली में तृतीय विश्व साधु सम्मेलन का आयोजन सरकार को वांछित कार्यवाही हेतु साकार रूप देने के लिये किया गया है।

भवदीय

डॉ० स्वामी भगवदाचार्य
अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष
विश्व साधु परिषद
सनातन धर्म परिषद्

कार्यालयः– सनातन धर्म आश्रम, सनातन नगर (कमता), चिनहट, लखनऊ (उ० प्र०)
श्री तुलसी जन्मभूमि राजापुर, सूकरखेत, जनपद–गोण्डा, (उ० प्र०)

सम्पर्क :– **9452270370, 9793949293, 9554889030, 9161898603, 9648184979**

सनातन धर्म परिषद्

श्रीतुलसी जन्मभूमि न्यास, श्रीपंतजलि जन्मभूमि न्यास

हमारे लिये यह बड़े गौरव की बात है कि गोण्डा जिले में श्रीरामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज और योग के प्रणेता महर्षि पतंजलि की जन्मभूमि है। गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी का जन्म श्रावण शुक्ला सप्तमी संवत् 1554 को अयोध्या के पास गोण्डा जिलार्न्तगत सूकरखेत स्थित सरयू तट राजापुर में हुआ था। गोस्वामी जी ने कवितावली में उल्लेख किया है "तुलसी तिहारो घर जायऊ है घर को" (उत्तरकॉड-122) विनय पत्रिका में भी गोस्वामी जी ने संकेत किया है कि "राजा मेरे राजाराम अवध सहरू है" -250। उनकी गुरुभूमि श्रीनरहरिदास आश्रम पसका सूकरखेत है, जहाँ गोस्वामी जी ने अपने गुरु स्वामी नरहरिदास से बालपन में अचेता अवस्था में कथा श्रवण किया था। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में बालकाण्ड के 30वें दोहे मे संदर्भित किया है "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत"। तुलसी का ननिहाल दधिवल कुण्ड(दहौरा) जनपद बहराइच था। इसका उल्लेख गोस्वामी जी ने दोहावली के 496वें छन्द में किया है "कब कोढ़ी काया लही जग बहराइच ज्याइ"। काशी में शेष सनातन जी की पाठशाला में 15 वर्षो तक गोस्वामी जी ने विद्याध्ययन किया था। श्रीहनुमान चालीसा गोस्वामी जी के विद्यार्थी जीवन की रचना है, जो प्रत्येक घरों में श्रद्धा एवं भक्ति के साथ पढ़ी जाती है। इनके माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्माराम दुबे था। गोस्वामी तुलसीदास बालब्रह्मचारी एवं अविवाहित थे। गोस्वामी जी ने विनय पत्रिका-76 में उल्लेख किया है कि "ब्याह न बरेखी जाति पांति न चाहत हों"। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस, श्रीरामलला नहछू, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका आदि 12 ग्रंथों की रचना की थी। गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी महाराज ने सम्वत् 1680 में श्रावण कृष्णा तीज शनिवार को गंगा तट अस्सी पर काशी में लीला संवरण किये।

महर्षि पतंजलि का जन्म गोण्डा जिले में वजीरगंज के निकट कोंड़र में हुआ था। इस बात का उल्लेख महर्षि पतंजलि द्वारा व्याकरण के महान् ग्रंथ महाभाष्य में स्वयं पतंजलि ने किया है। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रंथों में भी पतंजलि को गोर्नदीय(गोण्डा) बताया गया है।श्रीपतंजलि जन्मभूमि कोंड़र गोण्डा मुख्यालय से 32 कि0मी0 दक्षिण और अयोध्या से 20 कि0मी0 उत्तर स्थित है। भोजवृत्ति का यह श्लोक इसका प्रमाण है-

योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्,
मलं शरीरस्य च वैद्यकेन,
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनाम्,
पतंजलिं प्राञ्जलिरानतोस्मि

महर्षि पतंजलि ने योग सूत्र के साथ-साथ महाभाष्य और आयुर्वेद ग्रंथ की भी रचना किया था। पातंजल योग के महत्व को देखते हुये संयुक्त राष्ट्र के महासचिव बान की मून ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रस्ताव पर प्रतिवर्ष 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की घोषणा की है। प्राचीन भारत के किसी ऋषि को इतना बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान नहीं मिला है। यह गोण्डा और भारतवासियों के लिये गौरव की बात है। इसी क्रम में महर्षि पतंजलि के जन्मस्थान पतंजलिपुरी कोंड़र, गोण्डा में 21 जून 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जायेगा।

भवदीय
तुलसी पीठाधीश डॉ0 स्वामी भगवदाचार्य
अध्यक्ष